चन्द्रालोक

राम सिंह

प्रकाशक
अनुभव प्रकाशन
57/6, बी० टी. रोड
कलकक्ता-700002

मूल्य 12 रुपये

मुद्रक :
पायनियर आर्ट प्रिंटर्स
32 बी, वृन्दावन बैशाक स्ट्रीट
कलकत्ता-5

जनवादी लेखक संघ
(कलकत्ता-जिला)
संयुक्त सह-सचिव
"श्री अशोक सिंह"
को

हमने तो जिन्दगी का तजुर्बा किया बयाँ
कहते हैं सुनने वाले कि ये फलसफा हुआ

(चन्द्रसेन विराट)

भूमिक

काव्य सृजन चन्द्र तत्व के प्रभाव से होता है। सृष्टि में सुकुमारता, शीतलता, प्रेम तत्व चन्द्रमा से ही प्रभावित है। इसीलिए इस संग्रह का नाम चन्द्रालोक रखा यानी चन्द्र का प्रकाश। इस संग्रह में सन् ८३ से सन् ६० तक की कविताएं आ गई हैं चन्द्रमा को विष का भाई भी कहा गया है, इस संग्रह में कहीं-कहीं आप उसे भी पायें जो आप को तिलमिलायेंगे।

जब इन्द्र ने अहल्या को छला था, तो चन्द्र ने इन्द्र का सहयोग किया था। इसक तात्विक अर्थ यही है कि चन्द्र के आलोक में प्रेमानुभूतियां प्रबल हो जाती हैं। यह कारण है कि प्रेमियों को चन्द्र सदैव प्रिय रहा। कवियों को उपमा के लिए शायद 'चन्द्र से सुन्दर कुछ नहीं प्यारा लगता। उनका प्रिय उपमान रहा है। वैज्ञानिकों ने सि किया है कि पूर्णिमा के दिन पागलों की हरकतें बढ जाती हैं। कवि, पागल, प्रेम एक ही श्रेणी में आते हैं। कवि कमो-वेश पागल होता है किन्तु पागल, कवि नह होता। यही फर्क है।

वैसे तो इस दुनिया में सब पागल हैं। कुछ लोग नाम के पीछे पागल हैं, कुछ चाम के पीछे। इसलिए कोई किसी पर हंस नहीं सकता क्योंकि हमाम में सब नंगे हैं।

चन्द्र में जो छाया है, किसी को पृथ्वी की छाया दिखाई पड़ती है, किसी को श्याम राम, किसी को पाप की काली छाया। अपना-अपना दृष्टिकोण है।

वैज्ञानिकों ने चन्द्र-लोक से मिट्टी ला कर पृथ्वीवासियों का दिखाया और कहा कि इसी काली मिट्टी की तुम्हारे साहित्यकार बड़ी तारीफ करते थे। लो देखो। लगा कि साहित्यकार हार रहा है, किन्तु दूसरी रात्रि नील गगन में चन्द्र फिर चमका और साहित्यकार जीत गया। चन्द्र मनोहारी था। दरअसल 'विज्ञान' अहंकारी है। वह प्रकृति पर आधिपत्य जमाता है फलतः वह जीत कर भी हारता है। आज इराक और अमरीका के बीच विज्ञान कराह रहा है।

विज्ञान के साथ जब तक साहित्य नहीं होगा—दुनिया की यही दशा होगी। साहित्यकार प्रकृति का भक्त है। ज्ञान के साथ भक्ति का होना अपेक्षित है।

विज्ञान के माध्यम से आप हवाई जहाज में उड़ सकते हैं, ऊंची अट्टालिका में रह सकते हैं, समस्त सुख के साधन रख सकते हैं, किन्तु ये तो बाहरी साधन हैं। जब तक

अन्तर्मन सुखी न होगा, ये बाहरी साधन दिखावे के रह जायेंगे। अन्तर्मन सुखी होगा, साहित्य से—जैसे शीतलता का संचार होता है चन्द्र किरणों से।

चन्द्र शिव के भाल पर सुशोभित है। शिव यानी कल्याण।
जगत का मंगल साहित्य से ही होगा।

शिव के भाल पर चन्द्र के साथ गंगा भी है। गंगा यानी "राम कथा सुरसरि के धारा।" साहित्य के साथ जब दर्शन जुड़ जाता है, तब वह और भी प्रभावी हो जाता है। उसका रूप विराट हो जाता है।

चन्द्रसेन विराट की ही गजल के साथ वक्तव्य भी समाप्त करता हूं—

आज पूरा चन्द्रमा है दोस्तो
किन्तु, भीतर तक, आग है दोस्तो
चांद को रोटी बनाती कौन है
एक भूखी आत्मा है दोस्तो
चांदनी में भी पढ़ाई कर रहा
चांद मुफलिस की शम्मा है दोस्तो

होली—1991 राम सिंह

अनुक्रम

यह कैसी आजादी आयी

गौतम गांधी के आँगन में
हिंसा का यह तांडव नाच
नित पढ़कर अखबारों में
किसे न होता है रोमांच
राक्षसी वृत्ति इन्सानों की
देख न फटे क्यों धरा-गगन !
निर्दोषों के खून से रंगी
आज पंचनद करती रुदन
कटते भेंड-सदृश बस-यात्री
आतंक चहुंदिशि है व्यापी
रोते बालक रोती नारी
छाती पीट पीट बेचारी
यहाँ व्यर्थ की मारा मारी
कैसी यह आजादी आयी
लिए मृत्यु का रूप घिनौना
भगतसिंह 'आजाद' (देश) भक्त का
क्या यही था स्वप्न सलोना
कहाँ गया वह राम राज्य
गांधी का अनुपम
क्या यूँ ही विनष्ट होना था
सुभाष - विक्रम
नेता सभी चौर्य - वृत्ति

के बने प्रणेता
भारत - भुवि का भाग्य
लिखे आधुनिक विधिवेत्ता
प्रतिदिन होता संविधान
का संशोधन
सत्ताधारी इच्छानुसार
करते हैं शासन
यह लोकतंत्र है या राजतंत्र
कुछ समझ न आता
पत्रकार को पीट - पीट
जो समझ सिखाता
प्रहरी जो है लोकतंत्र—
के 'पत्रकार'
'आंसुका' में बंद
उन्हें कर देती सरकार
यह शासन हिटलरी
नाम है लोकतंत्र का
यह तो है रावण
भेष बनाए साधू का
कर न सकेगी आतंकवाद—
का यह कभी समापन
यह तो खुद ही
आतंकवाद का करती आराधन।

इतना मुझको प्यार न कर

इतना मुझको प्यार न कर
कि प्यार भार बन जाये
इतना तुम न शृंगार करो
कि शृंगार अंगार बन जाये।
जीवन में सब कुछ अच्छा है
किन्तु एक मात्रा में
चलना भी है अगर जरूरी तो
रुकना भी यात्रा में
इतना न चलो तुम तेज
कि पग में ठोकर लग जाये।
कहते हैं लोग प्यार अन्धा है
नहीं सूझता कुछ भी
मैं कहता हूं प्यार न होता
मर जाता ईश्वर भी
इतना न करो तुम प्यार
कि वह बदनाम हो जाये। ❀

स्मिताराज

यद्यपि थी वह सांवली
टायर वर्णी
किन्तु आँखें थीं प्रदीप्त
हेड लाइट - सी
आवाज/किसी सरगम हार्न - सी
थी वह अभिनेत्री प्रसिद्ध
फिल्मी संसार की
कला के आँगन में/रूप का सिक्का नहीं चलता
नहीं चलता-जाति का बुलडोजर
पूजा होती है कला की
गोर या श्याम वर्ण की नहीं
फूल वह पूज्य है
गंध हो जिसमें
गंध विहीन फूल
भला किस काम का
आग है वह जिसमें
कि उत्ताप हो
अन्यथा वह तो राख है
'देवशिशु' की मासूमियत
क्रूरता 'चरण दास चोर' की
हो विरोधी भाव - दृश्य
'अमृत' का बुढ़ापा पोज
'आज की आवाज' का जोश
सबमें था तुम्हारा राज
सब पर है तुम्हारा राज
स्मिताराज ✶

चलना जीवन की निशानी

(लोक गीत के तर्ज पर)

चलना जीवन की कहानी
रुकना मौत की निशानी - मोरे बालमुवां।

चलता सूरज, चलता चंदा, चलते तारे सारे
तू भी निकल सड़क पर आजा क्यों बैठा मनमारे
चरैवेति वेद की वाणी मोरे बालमुआं

रुका हुआ पानी है सड़ता, बहती का नाम नदी है
चलो बढ़ो आगे, आने वाली इक्कीसवी सदी है
आराम हराम नेहरु की वाणी मोरे बालमुआं

पवन चले सर - सर - सर, घड़ी चले निशिदिन
धड़कन कभी न रुकती तेरी—तू क्यों खोये पलछिन
पलछिन से बनी है जिन्दगानी मोरे बालमुआं ★

दिल दिया है जाँ भी देंगे ए सनम तेरे लिए

(फिल्म कर्मा के तर्ज पर)

रात भर खोया करेंगे बीडो पी पीकर के हम
नहीं छोड़ेंगे तुझे ऐ सनम हम मरते दम।
लोग चाहे गालियाँ दें
या करें जीना दुश्वार
हम तुम्हारे
तुम हमारे-इस जनम उस जनम।
तू न होती यह जगत
हो जाता निस्सार
कैसे धूएँ में उड़ाता
अपनी चिन्ताओं का भार
तू सलामत रहे उमर भर यूँ ही मेरी हमदम। ❀

मौन महाभाषा है

मेरी रानी !
आज कोई दूसरी बात न छेड़
मेरे और तुम्हारे दरम्यान
किसी वस्तु-व्यक्ति का
आज नाम भी न आये
आओ हम ऐसे एक दूसरे में खो जायें
कि तू तू न रहे
मैं मैं न रहूँ

राजकुमारी
कितने पहाड़ से दिन
काटने के बाद
तेरे चांद से मुखड़े को देखा है
अब तो
एक पल भी
हटने की
तमन्ना नहीं हो रही है
पलक तक झपकाना
बुरा लगता है
मन होता है
बस देखता रहूं
देखता रहूं

मेरी मल्लिका !
तेरे मेरे बीच में
आज तीसरा कुछ भी न हो
मैं नहीं चाहता
आज कुछ बोलना भी
आओ
आज
आंखों में ही
झांकें
मौन महाभाषा है ! ★

नेता जी का दौरा

"नेता जी का दिल्ली दौरा"
प्रथम पृष्ठ पर छपा अखबार में
"नेता जी का न्यूयार्क दौरा"
हेडलाइन छपी अखबार में
शायद नेता जी दौरा करते-करते
गये बौरा
एक दिन पढ़ा अखबार में
"नेता जी का दिल का दौरा"
फिर इसके बाद
नेता जी का नाम
नहीं छपा अखबार में
वे चले गये थे
किसी दूसरे संसार में
नेता जी को आखिर दिल से
या क्या लेना देना
वे दिल्ली जाते
या और कहीं
अब कौन किसे समझाये।



कर्मफल भोक्तव्यं

एक मौका दे रहा भगवान है
एक मौका खो रहा इन्सान है
अपनी गलती ढो रहा इन्सान है
और कह रहा कि दोषी भगवान है
भगवान तो सभी का माँ-बाप है
भोगता इन्सान खुद का पाप है
दुख पड़े खुद पर दोषी भगवान को कहे
दे दूसरे को दुख-तब भगवान कहाँ रहे
सोचता नहीं कुछ भी इन्सान खुदगर्ज
भगवान को दोष देने का बढ़ रहा मर्ज
परमपिता परमात्मा हम सबका हितैषी
हमारे या तुम्हारे लिए क्यों होगा दोषी
कर्मफल भोगना ही होगा हमें
आज नहीं कल तो लेना होगा हमें
आज मारा साँप, कल मारा तोता
निज पुत्र जब मरा तो छाती पीट रोता
चोरी में एक दिन किया था सहयोग
तेरा भी धन गया बन गया दुर्योग
भला चाहता है तो कर्मों को ले सुधार
क्यों व्यर्थ लादता है ईश्वर पर भार

काल ! मैं डरता नहीं

काल !
मैं तुझसे नहीं डरता
एक निश्चित अवधि है
जिसमें तू छू नहीं सकता मुझे
फिर क्यों डरूँ
समय से पहले क्यों मरूँ
जब तक तू नहीं आता नजर
अपने शब्द वेधी वाण
तुम पर छोड़ता बेढ़ब
जो तेरी वज्र छाती पर
अंकित रहेगी
और तू करेगा याद।
था कोई
मर्त्य
जो तुम्हारे चंगुल से बच गया
क्योंकि वह
मर कर, अमर हो गया।



प्रेम का मामला

प्रेम का मामला बड़ा अजीब है
अगर प्रेम नहीं है
तो हाथ भर की दूर भी
लाख मील है
वरना
लाख मील की दूरी भी
बहुत करीब है
प्रेम का मामला बड़ा अजीब है
प्रेम नहीं है अगर
एक ही शब्द अंगारे बन जाते हैं
वरना वही शब्द
जल के फव्वारे बन जाते हैं
प्रेम का मामला बड़ा अजीब है।



प्रेमचंद सम चंद लोग

प्रेमचन्द सम चन्द लोग ही पैदा होते हैं
जो 'हंस' संग 'जागरण' करें क्षणमपि नहिं सोते हैं
गाँधी की आँधी को उनके हर नायक ने स्वीकारा
हो "रंगभूमि" या "कर्मभूमि" कायरता को फटकारा
धन को सदा साधन ही माना, साध्य नहीं माना
धनपतराय कौन थे, क्या थे, नहीं किसी ने जाना
लिखकर 'गबन' 'गोदान' वे बने कथा सम्राट
उनका प्रभाव परिलक्षित है प्रति उर में विराट 

अजीब दुनिया

देखा अपनों में बेगाना
बेगानों में अपनापन
अजीब दुनिया-अजीब रिश्ते।
न कभी देखा न सुना
लेकिन जब नयन मिले
दिल के अन्दर सौ फूल खिले।
अब एक पल की भी जुदाई
लगता है मौत बन आई
समय बीते रोते-सिसकते।

जगत का प्यार झूठा है

जगत का प्यार झूठा है
सकल व्यवहार झूठा है
न हो विश्वास गर तुमको
तो करके प्यार फिर देखो
जो कहते हैं तुम्हारे बिन
नहीं जी सकेंगे पल-छिन
वही एकदिन ये कहते हैं
हटो जाओ खुदा-कसम
तब दिल टूटता है और रोता है
आँसूओं से दामन भिगोता है
और रो-रो के कहता है
जगत का प्यार झूठा है
सकल व्यवहार झूठा है



विरह की आग

विरह की आग में जलकर
तू क्यों खाक होता है।

न घड़ी जल्दी बीतेगी
न दिन जल्दी डूबेगा
न संदेशा कोई लायेगा
मूर्ख तू व्यर्थ रोता है
आँसू व्यर्थ खोता है।

जिसे तू कहता जन्मों का साथी
वो बातें हैं सिर्फ किताबी
चन्द धागों का रिश्ता है
कभी भी टूट सकता है
तकिया नाहक भिगोता है।

बुजुर्गों का तजुर्बा यह
जवानी दीवानी होती है
उससे भी प्यार हो सकता
जो उम्र में नानी होती है
मोती नाहक लुटता है।

*

एकान्तवास

एकान्तवास।
एकान्त वास में ही!
कान्त (प्रभु) का वास होता है
एकान्तवास।
एकान्त वास में ही
शान्ति का सुवास होता है
एकान्त क्या ?
जहां सिर्फ एक हो
और हो सब का अन्त
यही सच्चा एकान्त
अन्यथा
एकान्त में भी
मन
दिग्भ्रान्त होता है

आगमन

आग और मन
का एकत्रीकरण
बनेगा आगमन
आग और मन
यानी
मन को जला दो
तभी होगा आगमन
किसका ?
प्रभु का। 

रोज पढ़ो अखबार—पुराण

अखबार = आधुनिक पुराण
पुराण = पुरातन अखबार

रोज पढ़ो अखबार
यहाँ डकैती
यहाँ बलात्कार
रोज पढ़ो 'कल्याण'
जीवन ज्यों का त्यों
पुरानी कथा 'कल्याण' ★

इक्कीसवीं सदी

घर बैठे हमें पढ़ायेगी इक्कीसवीं सदी
टी० वी० से सैर करायेगी इक्कीसवीं सदी
मंहगाई का पाठ पढ़ायेगी इक्कीसवीं सदी
जीवन स्तर उठायेगी इक्कीसवीं सदी
कम्प्यूटर से काम करायेगी इक्कीसवीं सदी
ख्याली-पोलाव पकायेगी इक्कीसवीं सदी
रोजगारी का पाठ पढ़ायेगी इक्कीसवीं सदी
मंगल ग्रह पर ले जायेगी इक्कीसवीं सदी
इस जमीं से मोह छुड़ायेगी इक्कीसवीं सदी
राजीव सम मुस्करायेगी इक्कीसवीं सदी
हल्कू के पर लगायेगी इक्कीसवीं सदी
खाएँगे संविधान चबाएँगे देश गाँव
दिल्ली को लंदन बनायेगी इक्कीसवीं सदी ❀

अभिमानी हारता है

माना ये हैं अभिमानी
फिर भी
क्या जाता है अपना
दो पल की मीठी बातों से
इनके संग
इनके रंग– रंग जायेंगे
कुछ तो जगह बनेगा
कुछ तो दिल पिघलेगा
ये यदि बने पहाड़
चींटी हम बन जायेंगे
अभिमानी हारता है
सदा लघु से
पवन हारता है
नन्ही एक दूब से
ढहा दे विशाल वृक्ष को
भले हो पवन
किन्तु
नहीं बिगाड़ पाता कुछ
नन्ही सी दूब का
जीतने की कलाएं अनेक
नहीं दो-एक
[illegible]
कभी नन्हा बनकर भी

जीत लिया जाता है
जैसे दूब परास्त करता है
पवन को
जैसे हनुमान ने
हराया है सुरसा को
है विज्ञान का उद्घोष
स्थूल से अधिक शक्ति
अणु में
अणु से अधिक
परमाणु में
(यह नियम है विज्ञान में)
चींटी शक्कर ले चली
हाथी के सिर धूल
नन्हा बनने की कला
शक्तिशाली होने का मूल ★

मृत्योपनिषद्

सन् बावन (१९५२) के पहले नहीं था
माना वर्ष अस्सी जिऊँगा
तो बत्तीस (२०३२) के बाद
भी नहीं रहूंगा
सब खेल यही
मध्य का है
जब यहाँ पाना भी
है खोना
तब बात-बात पर
व्यर्थ है रोना
फेंको तुम ऐसा मुस्कान
कि ओठों की रेखा
छू ले कान
भागें सारे दुख-दर्द
बन जाओ तुम ऐसा मर्द
शिकन चेहरे पर न आये
कि दर्द भी शरमा जाये
जो बीत जाय
उसे झाड़ दो
जो सामने आये
उसे उखाड़ दो
जिन्दगी यों गुजार दो
बीते को विसार दो
क्या साथ आया
क्या साथ जायेगा
अगर न किया विचार
तो अन्त में पछतायेगा
जीते-जी न मिला सुख
तो मर कर क्या पायेगा ?

अश्क ने की किराने की दुकान

अश्क-से लेखक महान
कर लिए किराने की दुकान
अपनी फिर किस बूते करूँ
अपने ही गुण का बखान
किसी सम्पादक से न पहचान
साहित्य में करूँ क्या अवदान
खुद ही लिखूँ खुद ही पढ़ूँ
प्रकाशक बना है आसमान
प्रकाशक तो है बिजनसमैन
साहित्य-सेवा नहीं है मेन
अपने बस की बात नहीं
निकालूँ मैं भी मैगजीन
पन्ने पर पन्ने लिखता जाता
दो चार साल पर छपवाता
मित्रों को सादर भेंट किया
और किलो भाव में हूँ तौलता
यह मेरी साहित्यिक सेवा
भूला न देना गणेश देवा
मैया सरस्वती की करूँ अर्चना
मुझे मिलेगा कब मेवा

यादें बनी संदेशा

कितना हसीन / वो दिन था
कितनी हसीन / रातें
बैठे नदी किनारे
हाथों में हाथ डाले
करते थे प्यार की बातें
क्या बदनसीब / दिन आया
हम तुमसे बिछड़गये
फिर तुम कंहाँ
हम कहाँ
सूना हुआ
जहाँ
करता था मन
बस पड़े हों
कोने में कहीं
छिपे हों
रोते रहें हमेशा
यादें बनीं संदेशा
हर बात अब तुम्हारी
जाती है चीर छाती
कानों में कही बातें
आँखों से देखी सूरत
मन के फलक पर

कलियुग की बात

कौन तकलीफ उम्र-भर सहे
थोड़ी-सी बेईमानी करे मौज से रहे !
आदर्श का ढोल पीटे रात और दिन
मौका पाते ही ले किसी के हाथ से छीन
हरिश्चन्द्र, दशरथ सब सत्य पर चले
दीपक की तरह किन्तु दहक कर बले
दूसरों को ज्योति दी खुद मोम से गले
ऐसे आदर्श को कोई क्या लगाये गले !
झूठ जो बोले, खाये वह लड्डू
सत्य जो बोले बन जाय वह बुद्धू !
सत्य युग की बात छोड़ कलियुग की करो बात
घोड़ा ही सह सकता है घोड़े की लात

हर-पल
आती है बे-जरूरत
कुछ भी नहीं सहारा
फिरता हूँ
मारा-मारा
चाहूँ जितना भुलाना
उतना ही याद आये
जैसे किसी दलदल से
कोई निकलना चाहे
और डूबता ही जाये
और डूबता ही जाये
और डूबता ही जाये

कलियुग की बात

कौन तकलीफ़ उम्र-भर सहे
थोड़ी-सी बेईमानी करे मौज से रहे !
आदर्श का ढोल पीटे रात और दिन
मौका पाते ही ले किसी के हाथ से छीन
हरिश्चन्द्र, दशरथ सब सत्य पर चले
दीपक की तरह किन्तु दहक कर बले
दूसरों को ज्योति दी खुद मोम से गले
ऐसे आदर्श को कोई क्या लगाये गले !
झूठ जो बोले, खाये वह लड्डू
सत्य जो बोले बन जाय वह बुद्धू !
सत्य युग की बात छोड़ कलियुग की करो बात
घोड़ा ही सह सकता है घोड़े की लात

सरल जीवन : मुक्त जीवन

जब कहीं सुनाई पड़ता है
नारी का स्वर
हम कैसे तनावों से
जाते हैं भर
जाते हैं अकड़ हम
अन्दर से-बाहर से
आखिर होता है ऐसा
क्यों इस कदर।
जा रहे सड़क पर
सहज अपने ही रंग
नारी को देख लिया
बदल गया ढंग
कालर को ठीक किया
बाल फिर संवार लिया
अन्दर में छिड़ जाता
तनाव का है जंग।
हम हारने को राजी हैं
दुनिया के सामने
कोई न हराये हमें
नारी के सामने
नारी के नजरों में
हम ऊँचे ही रहें सदा
इस द्वन्द्व में हर क्षण

रखा है अभिमान ने।

सहज जीवन, सरल जीवन

मुक्त जीवन क्यों नहीं

दुनिया की चिन्ता छोड़

हम आत्माराम क्यों नहीं

जीवन को विष बनाया

हमने जानबूझकर

अब कहते हैं गरल

दिखता है, सुधा क्यों नहीं ॐ

सच्ची मित्रता

सच्ची मित्रता
आज ज्यों देशी घी
ढूंढ़े नहीं मिलती
पैसा लेकर भी
बनस्पति घी
चाहो तो
ले लो टिन के टिन
चाय की दुकान पर
मिलेंगे
बहुत-से मित्र
किन्तु उन्हें
मित्रों में न गिन ★

ठोकर बनाम जोकर

आदमी खा लेता है जब बहुत ठोकर
एक दिन जीवन में बन जाता है तब जोकर
फिर वह गम में नहीं जार-जार रोता
बल्कि वह गम में गाता है और हंसता
बन जाता है वह शिव
और गले में नाग को है पालता
जो कि एक दिन
उसे है डसता
कभी खुद पे हँसता
कभी औरों को हंसाता
सच है—
दर्द जब हद से है गुजरता
खुद ही दवा हो जाता

आत्म कथा

मैं दिन में मक्खी रहा मारता
रात भर पापड़ बेलता रहा
और जब तनिक मौका मिला
आस्मां के सितारे भी गिनता रहा।
इस तरह गर्द-गलियों की रहा छानता
कागज पर कलम यूं घिसता रहा
कलम कई तोड़ डाले मगर देखिए
दर्द था कि कलेजे में टीसता रहा।
आंख की ज्योति खोई पढ़-पढ़ किताब
आंख में न किसी के मैं बस सका
आंख की किरकिरी बन खटकता रहा
कि आंख का जिसकी मैं तारा रहा।
सरस्वती को मनाता रहा उम्र भर
कृपा की न कोई पाई झलक
लक्ष्मी भी रूठकर अलग हो गई
पार्वती से लगाऊँ कौन-सी ललक।
मुझको अक्षर से प्यार कम उम्र से
साथ कल्पना के आस्मां में उड़ता रहा
यथार्थ से एक दिन जब टकरा गया
आंख खुल गयी और जमीं पर आ गया।

भला क्यों ?

तुम्हारे पास आकर
बुद्धि सो जाती
हृदय का जागरण होता है
और शब्द खो जाते
भला क्यों ?
    नयन से नीर झर-झर यों
    गिरें, बदलियों से बूँदें ज्यों
    भला क्यों ?
कौन बतलाये भेद इन बातों का
अश्रु बन गलना हृदय का
और हृत्कम्पन !
भला क्यों !!

गजल

चन्द टुकड़ों पर बिके हुए लोग
लम्बे अल्फाज बोलते हुए लोग
एक लम्बी उमर पाने के लिए
प्यार से तलवे चाटते हुए लोग
झूठ की कसमें खा-खा कर
दशरथ हरिश्चन्द्र को गरियाते हुए लोग
पान खाकर उधार, तबस्सुम बेदम
बेईमान को रूह गिरवी रखे हुए लोग

गजल

टहलते नंग-धड़ंग बच्चे
धूल में सने हुए बच्चे
आग से झुलसे हुए बच्चे
सर्दी से ठिठुरे हुए बच्चे
भविष्य अपना आप बनाते बच्चे
ईंट के भट्ठे के ये बच्चे
छाती से चिपके हुए बच्चे
ये भारत महान के बच्चे

× × ×

ऋषि दयानन्द

हे उन्नायक संस्कृति संस्कृत के
हे नायक भारत जन-मन के
स्वीकार करो ऋषि मेरी वन्दना
चरणों पर अर्पित हार्दिक अर्चना ।
देखकर पाखण्ड-खण्डिनी-पताका
दुष्ट पाखण्डियों का हृदय कांपा
नारी-शिक्षा के रहे तुम समर्थक
उच्च-स्वर से घोषणा की 'मूर्ति पूजा है निरर्थक'
पोंछा बढ़कर विधवाओं के आँसू तुमने
है शत बार नमन ऋषिवर मेरा तुम्हें ।

आधुनिक-नव-भक्ति

प्रथम भक्ति नारिन कर संगा
दूसरि रहै सात दिन नंगा
आनन्द आश्रम सेवा तीसरी भक्ति जान
चौथी भक्ति भक्तिन संग करैं सामूहिक गान
पंचम भजन रजनीश प्रकाशा
छठ सम्भोग समाधि अंकासा
सप्तम ध्यान धरै प्रति श्वाँसा
आठवाँ तटस्थ लखै चहुँ पासा
गैरिक वस्त्र नवम् यह भाई
यही विधि तुरतहिं मिलिहैं साईं ॥

दहेज-दानव

खत्म हो जाये देश से यदि दहेज-दानव
बन जाय धरती स्वर्ग, यह सत्य मानव
मिट जाय सारा भ्रष्टाचार का कुचक्र यह
शोषण, हत्या आदि का भीषण ताण्डव
बेटी, बहिन का हो रहा जो अग्निदाह
अखबार में पढ़ नित्य हृदय उठता कराह
चारों तरफ आज बस यही शोर है
क्या करूँ कुछ नहीं अपना जोर है
आज जो सब दिख रहा प्रतिकूल है
दहेज यदि मिट जाय सब अनुकूल है
मिट जाय लोगों का मँहगाई का रोना
संकल्प ले लें अगर सब न लेंगे सोना

मेरे मित्र

जब मुझे कोई
कहता है—"मित्र"
मेरे मन में
खिंच जाता है
एक भयानक चित्र
जहाँ झूठ, बेईमानी
के घोर अन्धकार के सिवा
कुछ नहीं होता।

जब मुझे कोई
कहता है दोस्त
लगता है
वह
माँग रहा
मेरा गोश्त
और होश खो बैठता हूँ।

जब मुझे कोई
कहता है यार
मुझे तुमसे है
बहुत प्यार
मैं सहम जाता हूँ
निहारने लगता हूँ-
कहाँ छिपा
रक्खी है इसने कटार।

*

तुम्हारा रूप

यह तुम्हारा रूप
जैसे जाड़े की धूप
शबनमी आँखे
पलक ज्यों पाँखें
तुम्हारा मुस्कराना
बिजली का चमक जाना
बिखरी अलकें तुम्हारी
बदन पर हरित साड़ी
सभी कुछ मोह लेता
होश खो देता
अजब का है करिश्मा
तुम्हारी दृष्टि - भंगिमा
नाभि की गहराई
देह की सुघड़ाई
मौत बन आई
जन-जन की
भटकना छोड़ दो
बन एक की
नहीं यह झूठ,
बल्कि सत्य कहता
हुक्म दो तुम
'नील कमल' ला देता
यक्ष से लेता मैं टक्कर

हर प्रश्न का देता मैं उत्तर
मौत बेमौत लेता
न किन्तु तुम को छोड़ता
हर बात माथे पर
सदा, स्वर्ण-मृग पर
उठा लेता धनुष
शर तान देता
दौड़ता मीलों न कुछ
परवाह करता
एक लघु आदेश पर
तन - मन वार देता
उर्वशी ! जब से तू उर में बसी है
क्या कहूं तुमसे कि कैसी बेबसी है ।

गजल

अगर दिल में हमारे दर्द है
मौसम कोई भी हो सर्द है।
जिधर भी नजर उठा कर देखिए
उड़ता हुआ धूल का गर्द है।
माँ बहिन बेटी को जलता देखकर
ये चुपचुप खड़ा कौन मर्द है ?
चुकाता रहा जिसे मर-मर कर
न कम हुआ, कैसा कर्ज है।

रक्षाबन्धन

रक्षाबन्धन,
कैसा यह बन्धन !
माथे पर चंदन
मन में क्रन्दन
पैसों की खनखन
पुरोहित आगमन
यजमान पलायन
मुरझाता—
संस्कृति - सुमन
सब कुछ—
बेमन
न भाई
न बहन
खत्म हो गया
प्यार का चलन *

धन्य आलोचक तेरा राज

मैं लिखता हूँ थोड़ा
जो होता है कोड़ा
पाठक को समझूँ घोड़ा
कुछ इधर-उधर से जोड़ा
पाठक सिल तो मैं तोड़ा
करता हूँ तुकबन्दी
लोगों को लगती गन्दी
आलोचक करते चक-चक
मुझे उनकी पसन्द न बक-बक
लिखता ही तो जाता हूँ मैं
बढ़ता ही तो जाता हूँ मैं
हाथी जैसे निज पथ पर
देखता नहीं कुछ इधर उधर
कुत्ते करते हैं भौं भौं भौं
आलोचक करते कौं कौं कौं
न कांव - कांव से घबड़ाऊँ
लेखन-गति और बढ़ाऊँ
हो जायेंगे चुप ही आखिर
बोलेंगे कब तक ये काफिर
लेखनी नहीं थमेगी अब
चलने से भला रुकी थी कब
लिखने से कभी न हारूँगा
फिर क्यों न सितारों में चमकूँगा

"बच्चन" क्या कम गये सताये
"परसाई" क्या मार न खाये
आज वही हैं गगन में छाये
'तुलसी' भी तो बच नहीं पाये
आलोचक ने 'कीट्स' को मारा
इनकी नजर बड़ी खुर्दुरा
लेखक लिखते जब चुक जाता
तब आलोचक यह बन जाता
दोष इसमें क्या है ढूँढ़े
दर्पण में मुख कभी न देखे
लिख अवगुण का एक पिटारा
कितने कवियों को है मारा
अगर कहूं मैं इन्हें हत्यारा
बुरा न होगा ख्याल हमारा
जब मै कविता करने लगता
तब समय भागने है क्यों लगता
दो घंटे पलकों में जाते
घड़ी देख हम हैं पछताते
सोने में देरी हो जाती
नाड़ियाँ काँपने लग जातीं
आँखों में क्यों न हो पीड़ा
मेरे लिए यह उत्तम क्रीड़ा
साथी कहते पुस्तक - कीड़ा
इसमें मुझको कुछ न ब्रीड़ा
मैं रात - रात भर लिखता हूँ
फिर भी आलोचक से डरता हूं
अब आलोचक की पैनी दृष्टि कहाँ
उसमें ईर्ष्या का गंध समा

उसके जो अपने हैं निर्माता हैं
साहित्य जगत के उद्गाता हैं
जो उसके नहीं पराये हैं
उसको कब वे भाए हैं
आलोचक अब निष्पक्ष नहीं
गुटबन्दी बोलो कहाँ नहीं
आलोचक ज्ञान - परिपूर्ण नहीं
उसमें दोषों की कमी नहीं
'शुक्ल' जी 'छाया' से घबड़ाये
'द्विवेदी' को 'कली' न भाये
खार 'अज्ञेय' से सबने खाये
'महादेवी' को समझ न पाये
किन्तु पाठकों ने अपना-कर
अपने श्रद्धा-सुमन चढ़ा कर
जब ज्ञानपीठ पुरस्कार दिलवाया
तब आलोचक मुँह की खाया
'अमृता' को नालिश देकर
अपने मुख पर कालिख मलकर
तू ने अच्छा नाम कमाया
कितनी सुन्दर तेरी माया
धन्य आलोचक तेरा राज।
लेखक पंछी तू है बाज॥ *

तुम कहाँ घूमती हो तितली-सी

तुम कहाँ घूमती हो तितली-सी परिधानों में
यहाँ - वहाँ दौड़ते हुए बस ट्रामों में।
दिखने में तो लगती हो बिल्कुल सेक्सी
तुम्हारे लिए बुलवाऊँ क्या एक टैक्सी
कुछ समय गुजारो मुझ जैसे दीवानों में।
अपनों में रहती हो सदा बेगानों - सी
खोयी - खोयी आँखें तेरी पैमानों - सी
मिलजुलकर बैठें आओ किसी रेस्तराओं में।
कलकत्ता हो, बम्बई या कि हो दिल्ली
प्यार के बोल सुनकर क्यों होती हो बिल्ली
क्यों सिमटी-सिमटी-सी रहती हो अपने दरम्यानों में।
मेरी तुम मुमताज तेरा मैं शाहजहाँ
दर-दर ठोकर खाता रहा कहाँ - कहाँ
एक बार भूले-से आ जाओ सपनों में।
छन्दों के बन्दों में तुमको मैं बाँध लूँ
नयनों की पुतली में तुमको मैं आँज लूँ
बैठाये ही रहूँ तुमको दिल के तहखानों में।
मैं हूं पुजारी तेरी करू' आराधना
तृप्ति नहीं मिलती कभी हो कितनी साधना
उम्र यह गुजारू'गा तेरी ही यादों में। ★

सत्य कभी कटु नहीं होता

"सत्य सदा कटु होता है"—
जिसने कहा था यह
पाले था भ्रम वह
और भ्रम के टूटने में
दुख सदा होगा ही
सत्य तो यह है कि
सत्य कभी कटु नहीं होता
वह कटु लगता है—
सिर्फ उसके लिए
जो भ्रम में पलता है। ★

भला क्यों ?

तुम्हारे पास आकर
बुद्धि सो जाती
हृदय का जागरण होता है
और शब्द खो जाते
भला क्यों ?
    नयन से नीर झर-झर यों
    गिरें, बदलियों से बूँदें ज्यों
    भला क्यों ?
कौन बतलाये भेद इन बातों का
अश्रु बन गलना हृदय का
और हृत्कम्पन !
भला क्यों !!

गजल

चन्द टुकड़ों पर बिके हुए लोग
लम्बे अल्फाज बोलते हुए लोग
एक लम्बी उमर पाने के लिए
प्यार से तलवे चाटते हुए लोग
झूठ की कसमें खा-खा कर
दशरथ हरिश्चन्द्र को गरियाते हुए लोग
पाज खाकर उधार, तबस्सुम बेदम
बेईमान को रुह गिरवी रखे हुए लोग

गजल

टहलते नंग-धड़ंग बच्चे
धूल में सने हुए बच्चे
आग से झुलसे हुए बच्चे
सर्दी से ठिठुरे हुए बच्चे
भविष्य अपना आप बनाते बच्चे
ईंट के भट्ठे के ये बच्चे
छाती से चिपके हुए बच्चे
ये भारत महान के बच्चे

× × ×

ऋषि दयानन्द

हे उन्नायक संस्कृति संस्कृत के
हे नायक भारत जन-मन के
स्वीकार करो ऋषि मेरी वन्दना
चरणों पर अर्पित हार्दिक अर्चना
देखकर पाखण्ड-खण्डिनी-पताका
दुष्ट पाखण्डियों का हृदय कांपा
नारी-शिक्षा के रहे तुम समर्थक
उच्च-स्वर से घोषणा की 'मूर्ति पूजा है निरर्थक'
पोंछा बढ़कर विधवाओं के आंसू तुमने
है शत बार नमन ऋषिवर मेरा तुम्हें।

आधुनिक-नव-भक्ति

प्रथम भक्ति नारिन कर संगा
दूसरि रहै सात दिन नंगा
आनन्द आश्रम सेवा तीसरी भक्ति जान
चौथी भक्ति भक्तिन संग करै सामूहिक गान
पंचम भजन रजनीश प्रकाशा
छठ सम्भोग समाधि अकासा
सप्तम ध्यान धरै प्रति श्वांसा
आठवीं तटस्थ लखै चहुँ पासा
गैरिक वस्त्र नवम् यह भाई
यही विधि तुरतहिं मिलिहैं साईं ॥

दहेज-दानव

खत्म हो जाये देश से यदि दहेज-दानव
बन जाय धरती स्वर्ग, यह सत्य मानव
मिट जाय सारा भ्रष्टाचार का कुचक्र यह
शोषण, हत्या आदि का भीषण ताण्डव
बेटी, बहिन का हो रहा जो अग्निदाह
अखबार में पढ़ नित्य हृदय उठता कराह
चारों तरफ आज बस यही शोर है
क्या करूँ कुछ नहीं अपना जोर है
आज जो सब दिख रहा प्रतिकूल है
दहेज यदि मिट जाय सब अनुकूल है
मिट जाय लोगों का मँहगाई का रोना
संकल्प ले लें अगर सब न लेंगे सोना

मेरे मित्र

जब मुझे कोई
कहता है—"मित्र"
मेरे मन में
खिच जाता है
एक भयानक चित्र
जहाँ झूठ, बेईमानी
के घोर अन्धकार के सिवा
कुछ नहीं होता।

जब मुझे कोई
कहता है दोस्त
लगता है
वह
माँग रहा
मेरा गोश्त
और होश खो बैठता हूँ।

जब मुझे कोई
कहता है यार
मुझे तुमसे है
बहुत प्यार
मैं सहम जाता हूँ
निहारने लगता हूँ-
कहाँ छिपा
रक्खी है इसने कटार।

*

तुम्हारा रूप

यह तुम्हारा रूप
जैसे जाड़े की धूप
शवनमी आंखें
पलक ज्यों पांखें
तुम्हारा मुस्कराना
बिजली का चमक जाना
बिखरी अलकें तुम्हारी
वदन पर हरित साड़ी
सभी कुछ मोह लेता
होश खो देता
अजब का है करिश्मा
तुम्हारी दृष्टि - भंगिमा
नाभि की गहराई
देह की सुघड़ाई
मौत बन आई
जन-जन की
भटकना छोड़ दो
बन एक की
नहीं यह झूठ,
बल्कि सत्य कहता
हुक्म दो तुम
'नील कमल' ला देता
यक्ष से लेता मैं टक्कर

हर प्रश्न का देता मैं उत्तर
मौत बेमौत लेता
न किन्तु तुम को छोड़ता
हर बात माथे पर
सदा, स्वर्ण-मृग पर
उठा लेता धनुष
शर तान देता
दौड़ता मीलों न कुछ
परवाह करता
एक लघु आदेश पर
तन - मन वार देता
उर्वशी ! जब से तू उर में बसी है
क्या कहूं तुमसे कि कैसी बेबसी है। •

गजल

अगर दिल में हमारे दर्द है
मौसम कोई भी हो सर्द है।
जिधर भी नजर उठा कर देखिए
उड़ता हुआ धूल का गर्द है।
माँ बहिन बेटी को जलता देखकर
ये चुपचुप खड़ा कौन मर्द है?
चुकाता रहा जिसे मर-मर कर
न कम हुआ, कैसा कर्ज है।

★

रक्षाबन्धन

रक्षाबन्धन,
कैसा यह बन्धन !
माथे पर चंदन
मन में क्रन्दन
पैसों की खनखन
पुरोहित आगमन
यजमान पलायन
मुरझाता—
संस्कृति - सुमन
सब कुछ—
बेमन
न भाई
न बहन
खत्म हो गया
प्यार का चलन *

गजल

अगर दिल में हमारे दर्द है
मौसम कोई भी हो सर्द है।
जिधर भी नजर उठा कर देखिए
उड़ता हुआ धूल का गर्द है।
माँ बहिन बेटी को जलता देखकर
ये चुपचुप खड़ा कौन मर्द है ?
चुकाता रहा जिसे मर-मर कर
न कम हुआ, कैसा कर्ज है।

रक्षाबन्धन

रक्षाबन्धन,
कैसा यह बन्धन !
माथे पर चंदन
मन में क्रन्दन
पैसों की खनखन
पुरोहित आगमन
यजमान पलायन
मुरझाता—
संस्कृति - सुमन
सब कुछ—
बेमन
न भाई
न बहन
खत्म हो गया
प्यार का चलन *

धन्य आलोचक तेरा राज

मैं लिखता हूं थोड़ा
जो होता है कोड़ा
पाठक को समझूँ घोड़ा
कुछ इधर-उधर से जोड़ा
पाठक मिल तो मैं लोड़ा
करता हूं तुकबन्दी
लोगों को लगती गन्दी
आलोचक करते चक-चक
मुझे उनकी पसन्द न बक-बक
लिखता ही तो जाता हूं मैं
बढ़ता ही तो जाता हूं मैं
हाथी जैसे निज पथ पर
देखता नहीं कुछ इधर उधर
कुत्ते करते हैं भौं भौं भौं
आलोचक करते कौं कौं कौं
न कांव - कांव से घबड़ाऊं
लेखन-गति और बढ़ाऊँ
हो जायेंगे चुप ही आखिर
बोलेंगे कब तक ये काफिर
लेखनी नहीं थमेगी अब
चलने से भला रुकी थी कब
लिखने से कभी न हारूँगा
फिर क्यों न सितारों में चमकूंगा

"बच्चन" क्या कम गये सताये
"परसाई" क्या मार न खाये
आज वही हैं गगन में छाये
'तुलसी' भी तो बच नहीं पाये
आलोचक ने 'कीट्स' को मारा
इनकी नजर बड़ी खुंखारा
लेखक लिखते जब चुक जाता
तब आलोचक वह बन जाता
दोष इसमें क्या है ढूँढ़े
दर्पण में मुख कभी न देखे
लिख अवगुण का एक पिटारा
कितने कवियों को है मारा
अगर कहूं मैं इन्हें हत्यारा
बुरा न होगा ख्याल हमारा
जब मैं कविता करने लगता
तब समय भागने है क्यों लगता
दो घंटे पलकों में जाते
घड़ी देख हम हैं पछताते
सोने में देरी हो जाती
नाड़ियाँ कांपने लग जातीं
आँखों में क्यों न हो पीड़ा
मेरे लिए यह उत्तम क्रीड़ा
साथी कहते पुस्तक - कीड़ा
इसमें मुझको कुछ न भीड़ा
मैं रात - रात भर लिखता हूँ
फिर भी आलोचक से डरता हूं
अब आलोचक की पैनी दृष्टि कहाँ
उसमें ईर्ष्या का गंध सना

उसके जो अपने हैं निर्माता हैं
साहित्य जगत के उद्गाता हैं
जो उसके नहीं पराये हैं
उसको कब वे भाए हैं
आलोचक अब निष्पक्ष नहीं
गुटबन्दी बोलो कहाँ नहीं
आलोचक ज्ञान - परिपूर्ण नहीं
उसमें दोषों की कमी नहीं
'शुक्ल' भी 'छाया' से घबड़ाये
'द्विवेदी' को 'कली' न भाये
खार 'अज्ञेय' से सबने खाये
'महादेवी' को समझ न पाये
किन्तु पाठक ने अपना-कर
अपने श्रद्धा-सुमन चढ़ा कर
जब ज्ञानपीठ पुरस्कार दिलवाया
तब आलोचक मुँह की खाया
'अमृता' को नालिश देकर
अपने मुख पर कालिख मलकर
तू ने अच्छा नाम कमाया
कितनी सुन्दर तेरी माया
धन्य आलोचक तेरा राज़।
लेखक पंछी तू है बाज॥ ❀

तुम कहाँ घूमती हो तितली-सी

तुम कहाँ घूमती हो तितली-सी परिधानों में
यहाँ - वहाँ दौड़ते हुए बस ट्रामों में।
दिखने में तो लगती हो बिल्कुल सैक्सी
तुम्हारे लिए बुलवाऊँ क्या एक टैक्सी
कुछ समय गुजारो मुझ जैसे दीवानों में।
अपनों में रहती हो सदा बेगानों - सी
खोयी - खोयी आँखें तेरी पैमानों - सी
मिलजुलकर बैठें आओ किसी रेस्तराओं में।
कलकत्ता हो, बम्बई या कि हो दिल्ली
प्यार के बोल सुनकर क्यों होती हो चिढ़ी
क्यों सिमटी-सिमटी-सी रहती हो अपने दरम्यानों में।
मेरी तुम मुमताज तेरा मैं शाहजहाँ
दर-दर ठोकर खाता रहा कहाँ - कहाँ
एक बार भूले-से आ जाओ सपनों में।
छन्दों के बन्दों में तुमको मैं बाँध लूँ
नयनों की पुतली में तुमको मैं आँज लूँ
बैठाये ही रहूँ तुमको दिल के तहखानों में।
मैं हूँ पुजारी तेरी करूं आराधना
तृप्ति नहीं मिलती कभी हो कितनी साधना
उम्र यह गुजारूंगा तेरी ही यादों में। ★

सत्य कभी कटु नहीं होता

"सत्य सदा कटु होता है"—
जिसने कहा था यह
पाले था भ्रम वह
और भ्रम के टूटने में
दुख सदा होगा ही
सत्य तो यह है कि
सत्य कभी कटु नहीं होता
वह कटु लगता है—
सिर्फ उसके लिए
जो भ्रम में पलता है। ★

कवि-विरुद्ध

आज मैं
अपनी सब खराब कविताएँ
यहाँ ले आया हूँ—जलाने ? जी, नहीं –
तुम सबको सुनाने
यद्यपि ये मेरे लिए
नहीं हैं खराब
किन्तु लोग कहते हैं
इसलिए मैं भी—
मानता हूँ
कि ये सब हैं खराब
किन्तु क्या करूँ अनाथ
बिना सुनाये चारा न था
आखिर
खराबों में ही तो
खपत होगी खराब
आखिर शराबियों में ही तो
खपत होगी शराब
गांवों में
जाड़ों में
जब ईख रसदार हो जाती है
तब शामों को
सियारों को
लगती है हुँआस
और करते हैं हुआं-हुआं

शहरों में
कमरों में
जब छा जाता है चतुर्दिक अंधकार
तब कवि गण
अपने अस्तित्व के
रखने को बरकरार
कविता पढ़ते हैं
कविता सुनते हैं
और बड़ी जोर से करते हैं वाह। वाह
दे देकर ललकार
    भेज देता सबको सीमा पर
खुद लेता न हुंकार
    पड़ा रहता घर पर खा-पीकर।
कहता मैं ही सीमा-रक्षक
    मैं हूँ देश का प्रहरी
चिल्लाकर यदि मैं न जगाऊँ
    तू सो जाये निद्रा गहरी
और खुद चादर तान
    घोड़े बेंच के सोता
    उठता दिन के बारह
शाम भये तब महफिल जमती
    श्रोता नौ दो ग्यारह
    हो रसिया रामलला।
कहीं लड़ाई छिड़ी देश की
कहाँ [redacted] अब रहा न जाये
ठहरो कायर ! मैं आता हूं
    तू सोता सिंह जगाये
एक बैलून फटा पास में
    वे धरणी पर छाये
    ऐसे कवि से राम बचाये। ❀

जय हिन्दी, जय हिन्दुस्तान

हिन्दी है भारत माँ के भाल की बिन्दी
यह कलुष-हृदय वाला—
जो चाहता है करना चिन्दी
नहीं है द्वेष हिन्दी का किसी से
हिन्दी राष्ट्रभाषा है, इसकी ममता सभी से
मातृभाषा सभी हैं चाहे वह गुजराती हो या बंगाली
हो असमी कि उड़िया कि राजस्थानी
अपने क्षेत्रवासी की सभी ये मातृ-भाषायें
प्रश्न है कि किसको हम राष्ट्रभाषा बनाये
क्योंकि जरूरत राष्ट्रभाषा की सभी को है
समझता नहीं बंगाली जब जाता यू० पी० को है
नहीं समझता अवधी, बिहारी बंगाली कोई
समझता नहीं उड़िया, राजस्थानी कोई
एकता के सूत्र में बाँधे सभी को कोई भाषा
यदि समर्थ है तो वह है हमारी राष्ट्रभाषा
द्विभाषा या त्रिभाषा सूत्र नहीं उपयुक्त हमारे
कई भाषाओं का बोझ एक गरीब कैसे सम्हाले
हाँ जो हों धनी-मानी वे सीखें तीन या तीस
हमें उनसे न कुछ कहना, उनके पास है तगड़ी फीस
दयानंद ने लिखा 'सत्यार्थ प्रकाश' हिन्दी में
गाँधी ने अखबार निकाला हिन्दी में

क्या दयानन्द अज्ञानी थे या थे गांधी मूर्ख
हिन्दी के विरोध में क्यों हो रहे मुर्ख
मारिशस, रूस, कनाडा में छा रही है हिन्दी
कल सिर पर बिठायेंगे आज लगती।जिन्हें गन्दी
हिन्दुस्तान की भाषा हिन्दी हो
जहान की भाषा हिन्दी हो
जय हिन्दी, जय हिन्दुस्तान
भारत मेरा बने महान।



पीढ़ी-द्वन्द्व

पुरखों की कमाई का मालिक
बना बैठा रहता है
हमारा भी स्वामी
हम
जो भविष्य हैं
भविष्य के
मजबूरन बने रहते
हैं उसके हामी
बाप जो हमारे वर्त्तमान
में खड़ा है
अड़ा है हमारे भविष्य की राह में
अपने पुरखों के अहंकार के फन पटकता
बाप खुश है हमारी आह में।

जंगल

(वन ही जीवन है)

एक आदमी
जैसे ही घुसा
जंगल में लिए कुल्हाड़ी
कि गिलहरी ने
दी आवाज
तू कहां-तू कहां
सियार ने सबको
किया सचेत
कहके—वहां, वहां
मोर ने पूछा
आखिर—कहां-कहां
पपीहे ने
दिया जबाब
——यहां, यहां
कोयल ने कहा—जिओ जिओ
दादुर भी चुप न रहा, बोला—
जीने दो, जीने दो।

तेरे मेरे बीच में

जिसने कहा मेरा
ये मरे।
जिसने कहा तेरा
ये तरे।
तेरे मेरे बीच में
कैसा है भेद अन्जाना
सन्तों ने समझाया
किन्तु "मैं" ने न माना॥

जिसका लेना कभी न देना

जिसका लेना, कभी न देना, यही सुखद व्यवहार
इस गुण को जो अपनायेगा, होय सुखी परिवार
हो मनुआ होय सुखी परिवार।
जब इस दुनिया से जाएगा
क्या लौट फिर तू जग में आयेगा
शाम सवेरे घी पी मनुआ लेकर के उधार
मौज उड़ा ले, खाले पीले
क्या ले के बन्दे आयेगा
स्वर्ग नहीं ऊपर है कोई
यहीं स्वर्ग - सुख पायेगा
तन को व्यर्थ सुखाता है तज करके आहार॥

हर आदमी एक ख्वाब पालता है

हर आदमी एक ख्वाब पालता है
जिनमें कुछ पूरे होते हैं
और कुछ अधूरे
न सब अधूरे
न सब पूरे होते हैं
अधूरा ख्वाब जीवन-भर सालता है।
अगर ख्वाब न हो
तो जीवन बेकार है
जैसे आब न हो
तो सैलाब निस्सार है
ख्वाब से ही आदमी जीवन-सफर काटता है
इसलिए हर आदमी एक ख्वाब पालता है।

जब ज़ुल्फ लहराती है

जब ज़ुल्फ लहराती है,
तब जुल्म ढाती है
जब नदी लहराती है
तब तरु ढहाती है
जब तलवार लहराती है
मानवता सिसकती है
जब गाड़ी लहराती है
तब खन्दक में जाती है
लेकिन जब तिरंगा लहराये
तो आज़ादी मुस्कराती है
दोस्तो यह लहर भी,
किस-किस ढंग की आती है

o o o

किसी का आंचल जब लहराये
तो मन को दूर ले जाए
किसी की लहराती-सी चाल
तन को खींच ले जाए
कोई तन को ले जाए
तो कोई मन को ले जाए
पर एक लहर है तिरंगे की
कि तन-मन-प्राण उड़ जाए
दोस्तो !
यह लहर भी सोचो—
किस-किस ढंग की आए

कविता हो सरिता समान

कविता हो सरिता समान
शीतलता का करे दान
जन-जन का श्रमापहरण करे
जन-मन में अभिनव-शक्ति भरे
जब-जब उसका हो कल निनाद
जागे उर में नव-रस का स्वाद
कविता हो बनिता समान
जो जन-जन का रखे ध्यान
आये जो भी उसके द्वार
वह मिले खड़ी बाहें पसार
सेवा-ममता-सी मूर्तिमान
कविता हो बनिता समान
कविता हो दुहिता समान
निज गुण से बढ़ाये पितृ-मान
जिस से उसका हो साक्षात्कार
गा उठे झूमकर निर्विकार
निज गुण से पत्थर दिल में भी
लहरा दे धार गंगा-समान
कविता हो दुहिता समान

सब नसीब की बात

सब नसीब की बात होती है प्यारे
चांद के करीब होते कुछ ही सितारे
ऐसा भी नहीं कि जो सितारे—दूर होते हैं
वे चमक में कम होते हैं
या किसी बात में नम होते हैं
फिर भी जीवन-भर वे चांद को रोते हैं

और रात-रात भर रोते हैं
उन आंसुओं को ओस समझ
सुबह हम पैरों से रौंदते हैं
प्रेम में यही होता है प्यारे
पास में होते आंसू खारे
हां-आंसू खा रे
सब नसीब की बात प्यारे

कविता देवी
उर्फ मारे गये गुलफाम

कविता रोटी नहीं देती
सिर्फ देती है वाह वाही
यह धूर्त प्रेमिका है
जो इसके जाल में फंसता है
न जीता है
न मरता है।
बहुत दया खायेगी
तो एक कप चाय पिलायेगी
और फिर
जल्दी मिलने का वादा कायेगी
इधर - उधर दौड़ायेगी
पेड़ों के चक्कर लगवायेगी
नदी नाले में कुदायेगी
पर्वत पर चढवायेगी
मंदिर में बुलायेगी
होटल या धर्मशाला में टिकायेगी
बन्दर का नाच नचायेगी
और कबि
जो कविता का है दीवाना
उसके सुर में
सुर मिलाकर
गायेगा गाना
क्यों कि वह मजबूर है
अपने दिल के हाथों
मारे गये गुलफाम *

मेरा देश महान्

कलकत्ता तो नाम सिर्फ है 'कल' का साम्राज्य यहाँ है
यहाँ धर्मतल्ला तो नहीं है, लेकिन धर्म यहाँ है
गाँवों से यदि अन्न न जाए तो कलकत्ता मर जाए
'बोगोलीन सूख जाए, टेलीविजन सड़ जाए
गाँवों के दम से जिन्दा दिल्ली दिलदार बनी है
गाँवों के ही दृश्य चुराये जितनी फिल्म बनी है
मेरा देश महान है, गाँव उसी की जान है
कलकत्ता दिल्ली मद्रास बम्बई की यही तो शान है
खेतों की हरियाली यहाँ है शीतल मन्द सुगन्ध बयार
यहाँ न भड़भड़, यहां न खड़खड़ न चलते बस कार
रातों में चाँदनी और तारों को झिलमिल पांत यहां
रोज खनकते झांझ मजीरे, ढोल की लगती थाप यहां
धन से बड़ा यहां न कोई, यदि मन से बड़ा नहीं है
मंगल तेली की भी इज्जत, जितनी मंगल सिंह की है ✩

मई दिवस

हम मजदूर
दुनिया के सारे मजे से दूर
बगल में बैठ जायें कभी
तो देखने लगते लोग
घूर - घूर - घूर
हमने बनाये ताजमहल
सहकर वर्षा धूप
हम खुद रहें झोपड़ी में
सो भी टूटमटूट
क्यों मेरी किस्मत फूटी
मैं, जो दुनिया का
—करता पोषण
मेरा किया गया शोषण
मुझ किसान के
भोलेपन से
किया गया बलात्कार
महंगे दामों में देकर
खाद, बीज
लूटा सस्ते में अन्न भण्डार
शोषण शोषण शोषण
शोषण के ही बल पर
चतुर चोर चौधरी बन गए
लेकिन अब उनकी चल न सकेगी

दास एक अब गल न सकेगी
अब हम दुनिया के मजदूर
—एक हो गये

कल तक थे सोये
आज जग गए
आज सुबह का लाल सूर्य
कुछ सीख दे गया
उसकी लाली को देख
जो अँधकार भग गया
मुझे सीख दे गया
आज सुबह का लाल सूर्य
मुझे सीख दे गया *

जब हवा चली पुरवाई

जब हवा चली पुरवाई
तब याद तुम्हारी आई
जब पानी लगा बरसने
तब आँसू लगे ढुलकने
जब बिजली चमकी घन में
मैं लगा सोचने मन में
क्या मिलन का अन्त जुदाई।
क्यों दिन के बाद रात आई ?
यह कैसा है परिवर्त्तन
सुख-दुख का गमनागमन
क्यों रचा है इसे विधाता
एक आता है एक जाता
स्थिर न यहाँ है कुछ भी
फिर भी सब हैं लोभी
कोई धन का देखा भूखा
कोई नाम के पीछे सूखा
कोई नारी हित दीवाना
भूल चुका है गाना
फिर बरखा का झोंका आया
दुख भूल उठा मुस्कराया।

बाल - कविता

दीवाली दीवान हो गया

रॉकेट छोड़ा हाथ जल गया
ज्ञानदास को ज्ञान हो गया
डंडी आये मारे डंडा
रो धोकर दीवाली मन गया
ज्ञानदास को ज्ञान हो गया

विवेकदास का पेट छुट गया
मीठा खाये दौड़ - दौड़ कर
सोचा नहीं क्या होगा चलकर
आगे, भागे बाथरूम को
फिसले और पैर टूट गया
दीवाली का नाम हो गया

नीलम बिटिया हंसती हंसती
रसगुल्ला मुँह में थी धरती
रस जो नाक चढ़ गया
बची किसी विधि मरती मरती
दीवाली दीवान हो गया।
ज्ञानदास को ज्ञान हो गया। ★

सफलता उनकी बने चेरी

सफलता उन्हीं के कदम चूमती
विफलता से जो हैं डरते नहीं
श्रम - जल गंगा में जो नित नहाते
मरने से पहले जो मरते नहीं
शरद, ग्रीष्म - वर्षा हो जो भी
वह क्षणभर न ठहरता है
सुबह, शाम या हो दोपहरी
(अर्द्धरात्रि क्यों न हो गहरी)
फिर भी वह न विचलता है।
पग - पग पर बाधाएँ खड़ी हों
सुरसा - सम क्यों न आगे
हों उत्ताल - तरंग सिंधु सम
पीछे वह कभी न ताके
'अहर्निशं सेवामहे' का
व्रत जिन्होंने ले लिया
सफलता उनकी बने चेरी
जो 'फल' को कृष्णार्पण कर दिया
'कर्मण्येवाधिकारस्ते' का मर्म
जो जन पा लिया
संसार-सागर तर गया वह
सफल जीवन कर लिया ॐ

भगवान का प्रश्न : इन्सान से

मैंने तुम्हें जीवन दिया
फिर भी तूने नहीं जिया।
पान नहीं
बीड़ी नहीं
सिगरेट नहीं
क्या खाया, क्या पिया ?
ऐसे तूने क्यों जिया ?
गाँजा नहीं
शराब नहीं
भाँग नहीं
न खाया, न पिया
ऐसा तूने क्यों किया ?
न नाली में गिरा
न गाली ही दिया
न गाली भी लिया
मस्ती का जीवन मैंने दिया
तू नीरस जीवन क्यों जिया

आत्म-सीख

जो हुआ उसें तू भूल जा
हर भूल से एक सीख ले।
जो चला गया, सो विसार दे
जो चल रहा, उसे प्यार दे
है जहाँ सजा, है वहीं मजा
है जहाँ मजा, है वहीं सजा
इस बात को तू मान ले
इस तत्व को तू जान ले।
हाँ, मित्र में तेरा शत्रु है
हाँ, शत्रु में तेरा मित्र है
न शत्रु—शत्रु
न मित्र—मित्र
संसार-गति पहचान ले।
न कोई भाई
न कोई बन्धु
सब सखा—तेरे द्रव्य के
तू अपना न इनको मान ले॥

स्वार्थी संसार

प्रभुता हो
कि हुस्न
कि हो दौलत
चले जाने के बाद
लोग आँख फेर लेते हैं
कुछ ही होते हैं—सच्चे—
जो टिके रहते हैं
स्वार्थ के
प्रचंड प्रवाह में

कहा जा सकता है कि……

कहा जा सकता है
कि तुम्हारे वियोग में
मेरे प्राण नहीं निकले—अब तक
प्रेम झूठे साबित हुए
महज शब्दों के खेल हुए
किन्तु
सौगन्ध प्यार की
कि तुम्हारे वियोग में
मेरे प्राण तड़पते हैं हर पल
जैसे जल बिन मछली
मछली का सौभाग्य है
कि वह मर जाती है जल्दी
किंतु दुर्भाग्य मेरा
कि मेरे प्राणों की तड़प नहीं खत्म होती ★

सिनेमा जगत

सिनेमा जीवन
नाटकीय ?
कि
नारकीय ?
जहाँ तबला
वहीं अबला
" ढोल गवांर
शूद्र पशु नारी
ये सब ताड़न
के अधिकारी"
शोषण नारी का
चाहे वह हो गवांर
हो चाहे शहरी
उसे होना पड़ता है
गूंगी, अँधी, बहरी।

१५ अगस्त १९९०

हमारे आजा ने दी
        जो आजादी
वह निकल गयी
        हरामजादी
रोज लूट, हत्या
        बलात्कार, अपहरण
        देश की बर्बादी
राजनीति वेश्या
        जहाँ हर क्षण गाली गलौज
एक दूसरे का चरित्र-हनन
        हर आदमी फसादी।
समाज मे
        दहेज
वधू दहन
        नींव ही हिला दी।

वे पीड़ा न सह सकें
वे रो पड़ें
तो मुझे माफ करना
मैं हृदय पत्थर बना लूंगा
मुंह से 'उफ' न कहूँगा
तू सर्वशक्तिमान है
तेरा मुझ पर अनेक एहसान है
मैं भक्त-तू भगवान है
तू मुझे शक्ति दे
यह भी कैसे कहूँ
क्या करूँ
तेरे चरणों में बार-बार नमन है
यह जीव तेरी शरण है
मां मारती है
बच्चा तब भी मां को ही पकड़ता
ऐसे ही
मैं
हे पिता
हे मां
हे मेरे बन्धु-सखा
तुम ही मेरे हो
मै अनाथ हूँ
भले ही यह संसार
दिखायी पड़े भरा-पूरा
किन्तु मेरी आत्मा अकेली
भटकती है

वे पीड़ा न सह सकें
वे रो पड़ें
तो मुझे माफ करना
मैं हृदय पत्थर बना लूंगा
मुंह से 'उफ' न कहूंगा
तू सर्वशक्तिमान है
तेरा मुझ पर अनेक एहसान है
मैं भक्त-तू भगवान है
तू मुझे शक्ति दे
यह भी कैसे कहूँ
क्या करूँ
तेरे चरणों में बार-बार नमन है
यह जीव तेरी शरण है
मां मारती है
बच्चा तब भी मां को ही पकड़ता
ऐसे ही
मैं
हे पिता
हे मां
हे मेरे बन्धु-सखा
तुम ही मेरे हो
मै अनाथ हूँ
भले ही यह संसार
दिखायी पड़े भरा-पूरा
किन्तु मेरी आत्मा अकेली
भटकती है

औरत

औरत
चूहे दानी के अंदर-एक रोटी का टुकड़ा
गोल-गोल
उजला-उजला
चूहे दानी में फँसा पुरुष
दौड़ता है, इधर-उधर
निकल नहीं पाता है
बार-बार सिर टकराता है
लहूलुहान होता है
हाँफता है गिरता है
विवश चिल्लाता है, गुर्राता है
रोटी का टुकड़ा
हिलता-मुस्कराता है

प्रेम और वासना

एक सुन्दर युवती को
उन्होंने बना लिया जूती
पहले तो किया प्रेम
फिर किया विवाह
उस पर कड़ी फटकार
गाल पर चटाक
मुंह पर तलाक
यही गूंजता है
एक दिन गाते थे—
'तेरे बिना भी क्या जीना'
अब गाते हैं
'तेरे बिना भी जी लूँगा'
यह प्रेम नहीं-वासना है
प्रेम तो त्याग, तपस्या की साधना है
समर्पण का दूसरा ,नाम है
वह तो दिन-दिन चढ़ता है
उतरता नहीं
छाया की तरह अंधेरे में भागता नहीं।

भाई करता भय पैदा . . .

भाई करता भय पैदा
और सिर पर पिता का डंडा
माँ करती हरदम काँ काँ
घर बन गया बियावां
स्वारथ के रगड़े - झगड़े
कौन कमजोर—कौन तगड़े
घेरे हर पल आशंका
शीत युद्ध का मद्धिम डन्का
हर दिल में बजता है
प्यार का नाटक
मोह का त्राटक
यूँ ही चलता रहता है
बाहर रामायण की बातें
अन्दर कौरव-पाण्डव की घातें
त्याग-तपस्या के लम्बे कुर्ते के नीचे
"निज हित" गंदी गंजी का रहता है

जीवन-साथी

जीवन-साथी
कहाँ है आग
कहाँ है बाती
तेरे कारण
दुख—जीवन व्यापी
सब ही मौसम
लगता गुमसुम
खत्म हुई आज़ादी
याद तेरी आखों में
दिल के हर कम्पन में
आती-जाती सासों में
हर जगह तू समायी
जागूँ तो चिन्तन में तू
सोऊं तो सपनों में तू
प्यार के शिकंजे में ऐसी कसकन
थल पर मीन का ज्यों तड़पन ही तड़पन



प्रिये तुम्हीं बताओ

तुम
जिसके पास कैद है
मेरा दिल
तुम जब न थीं
मेरी जिन्दगी में
मुझे यह दुनियां पसन्द थी
बेहद।
तुम मिलीं
दिल तुम्हारी गिरफ्त में हुआ
और दुनियां बेगानी हो गयी
अब तुम दूर हो
मजबूरियां है कुछ
जिससे हम तुम दूर हैं
शरीर से
दिल से नहीं
अब तड़पन सही नहीं जाती
मरने [illegible] की इच्छा होने लगी है
ताकि दुखों से छुटकारा मिले
या
कहना नहीं चाहिए
लेकिन
कहना भी पड़ता है
कि तुम्हीं मर जाओ
ताकि मेरा दिल

तुम्हारी गिरफ्त से छूट जाय
मैं सुकून महसूस कर सकूँ
मुझे यह दुनियाँ फिर से प्यारी लगे
मैं अपना दिल कहीं भी लगा सकूँ

नाच में
संगीत में
कार्य में
व्यवहार में
यूँ जीना तो
अपनी लाश
कंधे पर ढोना है
लेकिन मौत
कब आयेगी ?
यही तो रोना है
क्या मौत को
बलात् बुलाया जाय
यानी
अपने को मिटाया जाय
प्रिये तुम्हीं बताओ
आखिर क्या किया जाय

या
आओ दोनों ही मरें
और
दूसरी दुनियाँ में
मिलने का संकल्प करें
कहते हैं
अंतिम इच्छा पूरी होती है।

क्या प्यार में मरना ही प्यार है ?
क्या प्यार में जलना ही प्यार है ?
क्या प्यार तलवार की धार ही है ?
क्या प्यार में सिर का बलिदान ही है ?
प्यार में इतनी परीक्षा क्यों ?
प्यार में आग पर नंगे पैर का धावन क्यों ?
प्यार से परमात्मा की क्या दुश्मनी है ?
प्यार क्यों अंधा है ?
प्यार क्यों पागल है ?
प्रिये तुम्हीं बताओ।

बापू जी

बापूजी के बन्दर तीन
तीनों उपदेशक
बापू के लगी गोलियाँ तीन
हे राम !
हर अफसर के कुर्सी के पीछे
बापू की तस्वीर
कहती है
बापू के सारे सिद्धान्त
हो गये पीछे
सत्य, अहिंसा की नगरी में
घूस और हिंसा का जोर
'रामनाम सत्य है'
मचा गली-गली है शोर

हो गयी कविता खत्म

भैंस ब्याई मरी पड़िया हो गयी कविता खत्म
धान काटा और ढोया हो गयी कविता खत्म
खटा सुबह और शाम हो गयी कविता खत्म
धूप में दिनभर जो झुलसा हो गयी कविता खत्म
कविगण हैं गुन-गाते, खेत की खलिहान की
दो चार दिन करते किसानी हो जाती कविता खत्म

क्षणिकाएँ

1. रहिमन पैसा राखिए, बिन पैसा सब सून।
पैसा बिना न पढ़ि सकै, लड़का देहरादून॥
अर्थ की महिमा परखो॥

2. दर दर माँगता छप्पा कह, धमाकर सितारा।
झोली तेरी भरेगा, वो मोहन दुलारा॥
नाम की महिमा चक्खो॥

3. जिसका चाहता हूँ मंगल
वह मुझसे करता है दंगल
जिसको देता हूँ दावत
वह ठान लेता है अदावत

4. पत्र मिला,
धन्यवाद !
पठक्षेप—
क्षमाप्रार्थी
—एक अकिंचन।

5. लिखो
खूब लिखो
ताकि तुम्हारी कलम
और पैनी हो
जो पाठक के
सिल रूपी माथे पर
एक दिन
एक छेनी हो

(6) तीर-ए-नजर से जख्मी जिगर
शम्मा से पूछे परवाना
ऐ शम्मे बता दिल चीज है क्या
क्यों तुझपे मिटा मैं दीवाना
तेरी रूप-किरन से मत्त हुआ जब
तुझ पर कितना मंडराया तब
तू रूप-गर्व में ही भूली
मेरे जीवन को बनाया वीराना।

(7) प्यार जब होता है,
आग लगती है सीने में
आंसू आते हैं जब,
तब मजा नहीं जीने में
अपना दुखड़ा सुनाता हूँ मैं
तुम कहते हो वाह-वाह
अरे डूब मरो, दिल
तुम्हारे नहीं है सीने में

(8) चाहे खुशियाँ मिलीं या लाखों ही गम
फिर भी हम जी लिए बस तुम्हारे लिए
बस तुम्हारे लिए।
कभी उफ न किये
मुंह - सी लिये
हम तुम्हारे लिए
बस तुम्हारे लिए

तुम न आए इधर
न खत ही दिये
राह देखा किए
हम तुम्हारे लिए
बस तुम्हारे लिए

(9) अभी तो रात बाकी है
अभी तारे चमकते हैं
अभी सो जाओ मेरे पास
कि अंगारे दहकते हैं

(10) • मेरी पत्नी
मेरा लड़का
अपना मकान
यही 'ममत्व'
यही 'अपनत्व'
बनता है—
दुख का कारण
जब कि
अंधकार में
नहीं साथ देती
परछाईं भी
अपनी ।





राम सिंह

क्रमशः प्रकाशित रचनाएं

(1) हृदय के आँसू — कविता संग्रह

(2) एक दिशा — कहानी संग्रह

(3) अश्रुमुक्ता — कविता सं

(4) प्रणय पुराण — निबन्ध संग्रह

(5) चन्द्रालोक — कविता संग्रह

प्रकाश्य रचनाएं

(1) कुर्सी की उठापटक (राजनीति)

(2) मानस के प्रांगण से (निबन्ध)

(3) शब्द-विचार (शब्द-अर्थ चिन्तन)

(4) कविता-तीर्थ (सम्पूर्ण कवित. संकलन)

एवं

अनुभव अनियतकालीन पत्रिका का प्रकाशन अबतक 6 अंक प्रकाशित